ॐ

संक्षिप्त नित्यसन्ध्योपासनविधिः

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

अथ संक्षिप्त-नित्यसन्ध्योपासनविधिः

स्नान आदि से निवृत्त होकर शिखाबन्धन, स्वकुलपरम्परा के अनुसार तिलक धारण करके सन्ध्यावन्दन करने केलिये अपने आसन, पंचपात्र, अर्घ्यपात्र, आदि सामग्री तैयार करके बैठकर आचमन करें –

ॐ केशवाय स्वाहा, ॐ नारायणाय स्वाहा, ॐ माधवाय स्वाहा।

हाथ धोवें – **हृषीकेशाय नमः।**

शरीरशुद्धिकरण मन्त्र का विनियोग पढ़ें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, विष्णुर्देवता, शरीर/हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

अपने शरीर पर जल छिड़कें –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

आसनशुद्धिमन्त्र का विनियोग पढ़ें –

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनपवित्रकरणे विनियोगः।

अपने आसन के नीचे थोडे जल डालकर गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजन करे –

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

सन्ध्या का संकल्प –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने तत्सत्श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरेऽअष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे --- क्षेत्रे ---ग्रामे बौद्धावतारे उत्तरायने/दक्षिणायने विक्रमशके षश्ठिसंवत्सराणां मध्ये --- संवत्सरे --- ऋतौ --- मासे --- पक्षे --- तिथौ --- वासरे प्रातः/मध्याह्न/सायं काले --- गोत्रोत्पन्नो --- शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽअहं ममोपात्तदुरित क्षयपूर्वकश्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं सन्ध्योपासनं करिष्ये।

निम्न मन्त्र से पवित्री को धारण करें (कुशा की पवित्री अथवा सोने की अंगूठी हो) –

ॐ भूर्भुवःस्वः।

जलोपस्पर्शन मन्त्र का विनियोग पढ़ें –

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ ऋतं चेति मन्त्रस्य मधुच्छन्दसोऽघमर्षण ऋषिरनुश्टुप्छन्दो भावृत्तं दैवतमपामुपस्पर्शने विनियोगः।

आचमनीय पात्र के जल को स्पर्श कर इस मन्त्र को पढ़ें –

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिशतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

प्राणायाम के इन चार विनियोगों को पढ़ें –

ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्दैवीगायत्री छन्दः अग्निः परमात्मा देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

ॐ भूरित्यादिसप्तव्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजगौतमात्रिवसिश्ठकश्यपा ऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगत्यस्छन्दांसि अग्निवाय्वादित्यबृहस्पतिवरुणेन्द्रविष्णवो देवता अनादिष्टप्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः।

ॐ आपो ज्योतिरिति मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः प्राणायामे विनियोगः।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

प्रणायाम के मन्त्र –

ॐ ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्। ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो जयोती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवःस्वरोम्।।

प्राणायाम के अनन्तर किये जानवाले आचमन का विनियोग –

1. प्रातः सन्ध्या में आचमन का विनियोग–

ॐ सूर्यश्च मेति मन्त्रस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता आचमने/अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

प्रातः आचमन मन्त्र –

ॐ सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्शं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृत योनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

2. मध्याह्नकालीन सन्ध्या में आचमन का विनियोग –

ॐ आपः पुनन्त्विति ब्रह्मा ऋशिर्गायत्री छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः।

मध्याह्नकालीन आचमन मन्त्र –

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ आप: पुनन्तु पृथिवीं पृथ्वी पूता पुनन्तु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं च यद्वा दुश्चरितं मम। सर्वं पुनन्तु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहꣳस्वाहा।।

3. सायंकालीन सन्ध्या में आचमन का विनियोग –

ॐ अग्निश्च मेति मन्त्रस्य रुद्र ऋशि: प्रकृतिश्छन्दोऽग्निर्देवता आचमने/अपामुपस्पर्शने विनियोग:।

सायंकालीन आचमन मन्त्र –

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्य: पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंच दुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

मार्जन का विनियोग पढ़ें –

ॐ आपो हि ष्ठेत्यादि त्र्यृचस्य/मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्द: आपो देवता मार्जने विनियोग:।

अब मार्जन करें – (बायें हाथ में जल लेकर कुशाओं से अथवा दाहिने हाथ की अंगुलियों से 1 से 7 तक मन्त्रों को बोलते हुये सिर पर जल छिड़कें। 8 वें मन्त्र से पृथिवी पर छोड़ें और 9 वें मन्त्र से पुन: सिर पर जल छिड़कें।)

1. ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुव:। 2. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। 3. ॐ महे रणाय चक्षसे।
4. ॐ यो व: शिवतमो रस:। 5. ॐ तस्य भाजयते ह न:। 6. ॐ उशतीरिव मातर:।
7. ॐ तस्मा अरं गमाम व:। 8. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। 9. ॐ आपो जनयथा च न:।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

शिरस्सेक मन्त्र का विनियोग पढ़ें -

ॐ द्रुपदादिवेति मन्त्रस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवता शिरस्सेके विनियोगः।

शिरस्सेक मन्त्र पढ़ते हुये सिर पर जल छिड़कें -

ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।।

अघमर्षण मन्त्र का विनियोग पढ़ें -

ॐ अघमर्षणसूक्तस्याघमर्शण ऋशिरनुष्टुप्छन्दो भाववृत्तो देवता अघमर्षणे विनियोगः।

अघमर्षण करें यानि दाहिने हाथ में जल लेकर उसे नाक से लगाकर निम्न मन्त्र पढ़ें और ध्यान करें की समस्त पाप दाहिने नाक से निकलकर हाथ के जल में आ गये हैं। फिर उस जल को विना देखें बायीं ओर फेंकें -

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।

पुनराचमन मन्त्र का विनियोग पढ़ें -

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप्छन्द आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोग:।

अब इस मन्त्र से आचमन करें -

ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुख:। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्।।

सूर्य को अर्घ्य देने से पहले सूर्यार्घ्य का इन तीन विनियोगों को पढ़ें -

1. ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्द: परमात्मा देवता अर्घ्यदाने विनियोग:।

2. ॐ भूर्भुव:स्वरितिव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युश्णिगनुश्टुभस्छन्दास्यग्निवायुसूर्या देवता अर्घ्यदाने विनियोग:।

3. ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋ ार्गायत्री छन्द: सविता देवता अर्घ्यदाने विनियोग:।

(यदि सूर्योदय तथा सूर्यास्त से तीन घड़ी बीतने के बाद अर्घ्य दे रहे हैं तो पहले प्रायश्चित्तरूप अर्घ्य निम्न मन्त्र से दें - **'ॐ भूभुर्व:स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्। स्वर्भुवर्भूरोम्'** तत्पश्चात् नित्य अर्घ्य दें।)

अब गायत्री मन्त्र से अर्घ्य दें -

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

1. प्रातःकाल में – '**ॐ ब्रह्मस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।

2. मध्याह्नकाल में – '**ॐ वि णुस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।

3. सायंकाल में – '**ॐ रुद्रस्वरूपिणे सूर्यनारायणाय नमः**' कहकर अर्घ्य दें।

सूर्योपस्थानविधिः –

सर्वप्रथम इन चार विनियोगों को पढ़ें –

1. ॐ उद्वयमित्यस्य मन्त्रस्य प्रस्कण्व ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

2. ॐ उदु त्यमित्यस्य मन्त्रस्य प्रस्कण्व ऋशिर्निचृद्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

3. ॐ चित्रमिति मन्त्रस्य कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

4. ॐ तच्चक्षुरित्यस्य मन्त्रस्य दध्यङ्ङथर्वण ऋषिरक्षरातीतपुरउष्णिक्छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

प्रातःकालीन सन्ध्या में पूर्वाभिमुख खड़े होकर हथेलियों को स्वस्तिक मुद्रा में पेट के सामने धारण कर, मध्याह्नकालीन सन्ध्या में उत्तराभिमुख खड़े होकर दोनों हाथों को ऊपर उठाकर और सायंकालीन सन्ध्या में बैठे हुये हृदय के सामने हाथ जोड़कर निम्न मन्त्रों से सूर्योपस्थान करें –

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

1. ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

2. ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम्।।

3. ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षꣳसूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।

4. ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳशृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

गायत्री मन्त्र जपने का संक्षिप्त विधिः -

गायत्री मन्त्र का जप करने से पूर्व शड़ंगन्यास, ध्यान, आवाहन, उपस्थान और विनियोग करना आवश्यक है। अतः उन्हें क्रम से बताया जा रहा हैं -

षड़ंगन्यासः -

ॐ ॐ हृदयाय नमः - हृदये, **ॐ भूः शिरसे स्वाहा** - शिरसि, **ॐ भुवः शिखायै वषट्** -शिखायाम्,
ॐ स्वः कवचाय हुम् -बाह्वोः, **ॐ भूर्भुवःस्वः नेत्रत्रयाय वौषट्** -नेत्रत्रये, **ॐ भूर्भुवःस्वः** -अस्त्राय फट्।

WWW.PRINT-DRIVER.COM
Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad

प्रात:कालीन सन्ध्या में ब्रह्मरूपा गायत्री का ध्यान

ॐ बालां विद्यान्तु गायत्रीं लोहितां चतुराननाम्। रक्ताम्बरद्वयोपेतामक्षसूत्रधरां तथा।।

कमण्डलुधरां देवीं हंसवाहनसंस्थिताम्। ब्रह्माणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोकनिवासिनीम्।।

मध्याह्नकालीन सन्ध्या में विष्णुरूपा गायत्री का ध्यान

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्। युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डलसंस्थिताम्।।

सायंकालीन सन्ध्या में रुद्र(शिव)रूपा गायत्री का ध्यान

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्। सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

गायत्री का आवाहन करने विनियोग पढ़ें -

ॐ तेजोऽसीति धामनामासीति च मन्त्रयो: परमेष्ठी प्रजापति ऋषियजुस्त्रिश्टुबुश्णिहौ छन्दसी आज्यं देवता गायत्र्यावाहने विनियोग:।

गायत्री का आवाहन करें (भावना करें कि सूर्यमण्डल से मां भगवती गायत्री आ रही है) -

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि ।1। धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।2।

गायत्री के उपस्थान (प्रणाम) का विनियोग पढ़ें -

ॐ गायत्र्यसीति मन्त्रस्य विवस्वानृषिः स्वराण्महापंक्तिश्छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

गायत्री का उपस्थान करें (यानि प्रणाम करें) -

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुश्पद्यपदसि। न हि पद्यसे नमस्ते तुरियाय दर्शताय पदाय परोरजसेऽसावदो मा प्रापत्।।

गायत्री मन्त्र का इन तीन विनियोगों को पढ़ें -

1. ॐ इति मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्री छन्दः परमात्मा देवता जपे विनियोगः।
2. ॐ भूर्भुवःस्वरितिव्याहृतीनां परमेष्ठी प्रजापतिर्ऋशिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभस्छन्दास्यग्निवायुसूर्या देवता जपे विनियोगः।
3. ॐ तत्सवितुरिति मन्त्रस्य विश्वामित्र ऋशिर्गायत्री छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

अब गायत्री मन्त्र का कम से कम 1 माला जप करें -

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

सूर्य को प्रदक्षिणा करते हुये प्रणाम करें -

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

जप को भगवान् के चरणों में अर्पण करें -

अनेन गायत्रीजपकर्मणा सर्वान्तर्यामि भगवान्नारायणः प्रीयताम्, न मम।

गायत्री का विसर्जन करने केलिये विनियोग पढ़ें -

ॐ उत्तमे शिखर इति मन्त्रस्य वामदेव ऋशिरनुश्टुप्छन्दो गायत्री देवता गायत्रीविसर्जने विनियोगः।

गायत्री विसर्जन मन्त्र (भावना करें कि गायत्री वापस सूर्यमण्डल में विलीन हो रही है) -

ॐ उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वतमूर्धनि। ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखम्।।

सन्ध्योपासनकर्म को परमेश्वर के चरणों में अर्पण करें -

अनेन सन्ध्योपासनाख्येन कर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम्, न मम।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

भगवान् का स्मरण कर सन्ध्योपासना को पूरा करें -

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। श्रीविष्णुस्मरणात्परिपूर्णताऽस्तु।।

विशेषसूचना :-

1. गायत्री का उपस्थान करने के बाद ब्रह्मशाप, वसिष्ठशाप, विश्वामित्रशाप और शुक्रशाप को तत्तत् विनियोग व मन्त्र पाठ पूर्वक विमोचन कर मन्त्र जप करना श्रेष्ठ है।

2. जप के पूर्व 24 मुद्रायें और जप के बाद 8 मुद्राओं को दर्शाने का विधान है।

इन दोनों को करने के इच्छुक गीता प्रेस, गोरखपुर द्वारा मुद्रित 'नित्यकर्म-पूजाप्रकाश' का अवलोकन करें।

हनुमान चलीसा

दोहा -

श्रीगुरु चरण सरोजरज निज मनु मुकुर सुधारि। बरनऊँ रघुवर विमल जसु जो दायकु फल चारि।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार। बलबुद्धिविद्या देहु मोहिं हरहु कलेस विकार।।

चौपाई -

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनी पुत्र पवन सुत नामा।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।।
हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै।।
संकर सुवन केसरीनन्दन। तेज प्रताप महा जग बन्दन।।
बिद्यावान गुणी अतिचातुर। राम काज करिबे को आतुर।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सिता मन बसिया।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचन्द्र के काज सँवारे।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावै।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राजपद दीन्हा।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।
जुग सहस्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डरना।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।
संकट तें हनुमान छुडावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है पर सिद्ध जगत उजियारा।।
साधु सन्त के तुम रखवारे। असुर निकन्दन राम दुलारे।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि भक्त कहाई।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।
जै जै जै हनुमान गोसाई। कअपा करहु गुरु देव की नाई।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बन्दि महा सुख होई।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।।
तुलसीदाय सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

दोहा –

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुरभूप।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

संकटमोचन-हनुमानाष्टकम्

बाल समय रबि भक्षि लियो तब, तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को, यह संकट काहु सों जात न टारो।।
देवन आनि करी विनति तब, छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो।
को नहीं जानत है जगमें कपि, संकटमोचन नाम तिहारो।।1।।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि, जात महा प्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब, चाहिय कौन बिचार बिचारो।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु, सो तुम दास के सोक निवारो। को0।।2।।
अंगद के संग लेन गये सिय, खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौ हम सो जु, बिना सुधि लाये इहाँ पगु धारो।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय, सिया सुधि प्रान उबारो। को0।।3।।
रावन त्रास दई सिय को तब, राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु, जाय महा रजनीचर मारो।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु, दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो। को0।।4।।
बान लग्यो उर लछिमन के तब, प्रान तजे सुत रावन मारो।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

लै गृह बैद्य सुषेन समेत, तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।।
आनि सजीवन हाथ दई तब, लछिमन के तुम प्रान उबारो। को0।।5।।
रावन जुद्ध अजान कियो तब, नाग कि फाँस सबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल, मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु, बंधन काटि सुत्रास निवारो। को0।।6।।
बंधु समेत जबै अहिरावन, लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देबिहिं पूजि भली विधि सों बलि, देउ सबै मिलि मंत्र विचारो।।
जाय सहाय भयो तब ही, अहिरावन सैन्य समेत सँहारो। को0।।7।।
काज किये बड़ देवन के तुम, बीर महा प्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को, जो तुमसों नहीं जात है टारो।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो। को0।।8।।

दोहा –

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लँगूर। बज्र देह दानव दलन, जय जय कपि सूर।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

गणेश जी की आरती

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।

माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा । लड्डुवन को भोग लगे, संत करें सेवा ।। जय ।।

एक दंत दयावंत, चार भुजाधारी । माथे सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी ।। जय ।।

अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया । बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ।। जय ।।

देवी की आरती

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)

भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय! जय!! जग.

तू ही सत्-चित् सुखमय शुद्ध ब्रह्मरुपा । सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा ।। 1 ।। जग.

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी । अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ।।2 ।। जग.

अविकारी अघहारी, अकल, कलाधारी । कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि हर संहारकारी ।। 3 ।। जग.

तू विधिवधू, रमा तू, तू उमा, महामाया । मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।। 4 ।। जग.

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा । तू वांछा-कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा ।। 5 ।।जग.

दश विद्या, नवदुर्गा, नाना शस्त्रकरा । अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रुप धरा ।। 6 ।।जग.

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

तू परमधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू । तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू ।। 7 ।।जग.

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा । विवसन विकट-स्वरुपा, प्रलयमयी धारा ।। 8 ।।जग.

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना । रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना ।। 9 ।।जग.

मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे । कालातीता काली, कमला तू वरदे ।। 10 ।।जग.

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी । भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदयत्री ।। 11 ।।जग.

हम अति दीनदुखी मा! विपत-जाल घेरे । हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।। 12 ।।जग.

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै ।करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै ।। 13 ।।जग.

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!) भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय! जय!!।। 14।। जग!!.

अम्बे माँ की आरती

जय अम्बे गौरी मैय्या जय श्यामा गौरी मैय्या जय मंगलमूर्त्ति मैय्या जय आनंदकरणी

मैय्या जय शत्रुनदलनी मैय्या जय दुष्टनदलनी मैय्या जय संकटहरणी मैय्या जय ऋद्धिसिद्धि करनी।

तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।। ॐ जय अम्बे गौरी ।।1 ।।

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को। मैय्या टीको मृगमद को।

उज्जवल से दोऊ नैना निर्मल से दोउ नैना चंद्रवदन नीकौ ।। ॐजय अम्बे गौरी ।।2 ।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ac
WWW.PRINT-DRIVER.COM

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै मय्या रक्तावर राजै । रक्तपुष्प गलमाला कण्ठन पर साजै ।। ॐजय अम्बे गौरी ।।3 ।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी । सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दु:ख हारी ।। ॐजय अम्बे गौरी।।4।।

कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती मय्या नासाग्रे मोती । कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।। ॐजय अम्बे गौरी।।5।।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर धाती मय्या महिषासुर धाती। धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ।। ॐजय अम्बे गौरी।।6।।

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भय हीन करे ।। ॐजय अम्बे गौरी।।7।।

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ।। ॐजय अम्बे गौरी।।8।।

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरुँ । बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरु ।। ॐजय अम्बे गौरी।।9।।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता । भक्तन की दु:ख हरता सुख सम्पति करता ।। ॐजय अम्बे गौरी।।10।।

भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी । मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी ।।ॐजय अम्बे गौरी।।11।।

कंचन थाल विराजत अगर कपूर वाती । श्रीमालकेतु में राजत दोलागढ़ में विराजत कोटिरत्न ज्योति ।। ॐजय अम्बे गौरी।।12।।

या अम्बे जी की अरती जो कोई जन गावे मय्या प्रेम सहित गावे । कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरिहर स्वामी।

मन वाच्छित फल पावे । ॐजय अम्बे गौरी।।13।।

मय्या जय श्यामागौरी मय्या जय मंगलमूर्त्ति मय्या जय आनंदकरणी

मय्या जय शत्रुनदलनी मय्या जय दुष्टनदलनी मय्या जय संकटहरणी

मय्या जय ऋद्धिसिद्धि करनी। ॐजय अम्बे गौरी ।।।।14।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

लक्ष्मी जी की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता मैया जय लक्ष्मी माता । तुमको निशिदिन सेवत हर-विष्णु धाता ।। 1 ।। टेक

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता । सूर्य, चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। 2 ।। टेक

दुर्गारुप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता । जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता ।। 3 ।। टेक

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभ-दाता । कर्म-प्रभाव-प्रकासिनि, भवनिधि की त्राता ।। 4 ।। टेक

जिस घर तुम रहतीं, तहँ सब सद्‌गुण आता । सब संभव हो जाता, मन नहिं घबड़ाता ।। 5 ।। टेक

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो राता । खान-पान का वैभव सब तुमसे आता ।। 6 ।। टेक

शुभगुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता । रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। 7 ।। टेक

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई गाता । उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता ।। 8 ।। टेक

गंगा जी की आरती

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता ।

जो नर तुमको ध्याता, जो नर तुमको ध्याता । मनवांच्छित फल पाता, ॐ जय गंगे माता ।। 1 ।।

चन्द्र-सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता । शरण पड़े जो तेरी, शरण पड़े जो तेरी ।

सो नर तर जाता, ॐ जय गंगे माता ।। 2 ।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

भवसागर से तारे, सब जग को ज्ञाता । करुणा दृष्टि तुम्हारी, करुणा दृष्टि तुम्हारी ।

त्रिभुवन सुख-दाता, ॐ जय गंगे माता ।। 3 ।।

एक बार भी जो नर, तेरी शरणागत पाता । यम की त्रास मिटाकर, यम की त्रास मिटाकर ।

परम सुगति पाता, ॐ जय गंगे माता ।। 4 ।।

आरती मातु तुम्हारी, जो जन नित गाता । अर्जुन जगत-जलधि का वही पार पाता ।। 5 ।।

शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा । ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ।। 1 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै । हंसासन गरुड़ासन बृषवाहन साजै ।। 2 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै । तीनों रुप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ।। 3 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

अक्षमाला बनमाला रुंड़माला धारी । त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ।। 4 ।।ॐ हर हर हर महादेव ।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे । सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ।। 5 ।।ॐ हर हर हर महादेव ।।

कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूलधरता । जगकरता जगहरता जगपालन करता ।। 6 ।।ॐ हर हर हर महादेव ।।

ब्रह्मा-विष्णु सदाशिव जानत अविवेका । प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका ।। 7 ।। ॐ हर हर हर महादेव ।।

काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दा बह्मचारी। नित उठ भोग लगावै नित उठ दर्शन पावै महिमा अति भारी।।8।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

ॐ हर हर हर महादेव ।।

त्रिगुण स्वामि जी की आरती जो कोई गावै । कहत शिवानन्द स्वामी कहत हरिहर स्वामी मन वांच्छित फल पावै ।। 9।।

ॐ हर हर हर महादेव ।।

हनुमान जी की आरती -

आरती कीजै हनमान लला की। दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।टेक।।

जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँपैं।।1।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई। संतन के प्रभु सदा सहाई।।2।।

दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये।।3।।

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।4।।

लंका जारि असुर सँहारे। सियारामजी के काज सँवारे।।5।।

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्रान उबारे।।6।।

पैठि पताल तोरि जम कारे। अहिरावन की भुजा उतारे।।7।।

बायें भुजा असुर दल मारे। दहिने भुजा संत जन तारे।।8।।

सुर नर मुनि आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।9।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई।।10।।

जो हनुमानजी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परमपद पावै।।11।।

प्रार्थना :-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।1।।

करचरणकृतं वा वाक्कायजं कर्मजं वा, श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।2।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठं।

वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये।।3।।

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं, दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणविधानं वानराणामधीशं, रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।4।।

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं, रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजं।

अंजनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं, कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयांकरम्।।5।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्।।6।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

कुछ वैदिक गायत्रीमंत्र :-

गणेशगायत्री :- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ति: प्रचोदयात्। अथवा

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात् ।1।

रुद्रगायत्री :- ॐ पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य महादेवस्य धीमहि। तन्नो रुद्र: प्रचोदयात्। अथवा

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्र: प्रचोदयात् ।2।

नन्दिगायत्री :- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो नन्दि: प्रचोदयात् ।3।

कार्तिकेयगायत्री :- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि। तन्न: षण्मुख: प्रचोदयात् ।4।

सवित्री गायत्री :- ॐ भू: ॐ भुव: ॐ सुव: ॐ मह: ॐ जन: ॐ तप: ॐ सत्यम्।

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचोदयात्।

ओमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव:स्वरोम् ।5।

सूर्यगायत्री :- ॐ आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्न: सूर्य: प्रचोदयात्। अथवा

ॐ भास्कराय विद्महे महद्द्युतिकराय धीमहि। तन्न आदित्य: प्रचोदयात् ।6।

लक्ष्मीगायत्री :- ॐ महालक्ष्मी च विद्महे सर्वसिद्धिश्च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्। अथवा

ॐ भूर्लक्ष्मीर्भुवर्लक्ष्मी: स्वर्लक्ष्मी: कालकर्णी। तन्नो महालक्ष्मी: प्रचोदयात् ।7।

वि णुगायत्री :- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णु: प्रचोदयात् ।8।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ac
WWW.PRINT-DRIVER.COM

गरुडगायत्री :- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि। तन्नो गरुड: प्रचोदयात्।9।

नरसिंहगायत्री :- ॐ वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि। तन्नो नरसिंह: प्रचोदयात्। अथवा

ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि। तन्न: सिंह: प्रचोदयात्।10।

ब्रह्मगायत्री :- ॐ वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि। तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।11।

अग्निगायत्री :- ॐ वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नो अग्नि: प्रचोदयात्।12।

दुर्गागायत्री :- ॐ कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमारि च धीमहि। तन्नो दुर्गि: प्रचोदयात्।13।

अथ मन्त्रपुष्पांजलि: -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।।1।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय ते नम:।।2।। ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एक:।।5।। सेवन्तिकावकुलचम्पकपाटलाब्जै: पुन्नागजातिकरवीररसालपुष्पै:। बिल्वप्रवालतुलसीदलमंजरीभि: त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।1।। मन्त्रविद्भिर्बुधवरै: श्रद्धापूर्व समर्पित:। मन्त्रपुष्पांजलिरियं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।2।। **अथवा** नानासुगन्धयुक्तं च यथाकालोद्भवं तथा। मया पुष्पांजलिर्दत्ता गृहाण परमेश्वर।।2।। **अथवा** नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च। भक्त्या दत्तानि पुष्पार्थं गृहाण परमेश्वर।।2।।

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM

क्षमा प्रार्थना -

यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

पूर्णता प्रदान करना -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

---000---

Created by demo-version of Universal Document Converter. Full version doesn't ad
WWW.PRINT-DRIVER.COM